ई – काव्य संग्रह

“कहीं धूप, कहीं छाँव”

रचियता,

भगवती प्रसाद व्यास “नीरद”

(बृज व्यास)

जीवन परिचय

1. रचनाकार का पूरा नाम	भगवती प्रसाद व्यास "नीरद"
2.पिता का नाम	स्व. श्री शंकर लाल जी व्यास
3.पत्नी का नाम	कुमुद व्यास
4.जन्म / जन्म स्थान	08/05/1954 तराना , जिला : उज्जैन , मध्य प्रदेश
5.वर्तमान स्थायी पता	16/29, राठी मोटर्स के सामने , खाद गोदाम के पीछे , ए .बी .रोड , शाजापुर , मध्य प्रदेश 465001
6.फोन नंबर / वाट्स अप नंबर / ई मेल	Mobile no. 9599244737 WhatsApp no. 9425428598 mail id : bpvyasbrij@gmail.com
7.व्यवसाय	स्वतंत्र लेखन ! अर्धशासकीय संस्थान से सहा. लेखाधिकारी पद से सेवानिवृति !
8.प्रकाशन विवरण (प्रकाशित रचनाओं का)	सरिता , मुक्ता , कादम्बिनी में वर्ष 1978 से 1988 तक , तथा 2016 में "भारत के प्रतिभाशाली हिंदी रचनाकार काव्य संग्रह" तथा "प्रेम काव्य सागर" एवं "काव्य अमृत" साझा काव्य संग्रह में भी रचनाओं का प्रकाशन ! "एक लम्हा ज़िंदगी" और "रूह की आवाज "तथा "खनक आखर की" साझा काव्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य !
9.सम्मान का विवरण (यदि कोई हो तो दें)	प्रतिभाशाली रचनाकार सम्मान , प्रेम काव्य सागर सम्मान तथा काव्य अमृत सम्मान 2016 में !
10.काव्य मंच /आकाशवाणी /दूरदर्शन /मंच पर यदि काव्य पाठ किया हो	1972 से 1976 तक आकाशवाणी इंदौर के युव वाणी कार्यक्रम में कविताओं एवं कहानियों का प्रसारण! इसी दौरान स्थानीय कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ 1974 से 1978 तक !

घोषणा :

मैं ये घोषणा करता हूँ कि आपके प्रकाशन से प्रकाशित होने वाले साझा काव्य संग्रह "कश्ती में चाँद " में प्रकाशन हेतु भेजी जा रही ये समस्त रचनाएँ मेरे द्वारा लिखित हैं तथा जीवन परिचय में दी गयी समस्त जानकारी सत्य है , असत्य पाए जाने की दशा में हम स्वयं जिम्मेदार होंगें!

रचनाकार का नाम : भगवती प्रसाद व्यास "नीरद"

दिनांक : 18/01/2017

वर्तमान पत्राचार का पता :

बी.पी.व्यास द्वारा सचिन व्यास ,
फ्लेट नंबर A-6 , खसरा नंबर 129 ,
फ्रायडे मार्किट लेन , कारपोरशन बैंक के सामने वाले गली ,
इगनू रोड , नेब सराय , न्यू देल्ही - 110068

1

रोज़ यहाँ गिरते चरित्र हैं !!

राजनीति की सीढ़ी चढ़कर
सत्ता पर काबिज़ हो बैठे !
अपराध इन्हें अपराध न लगता
दूजों की ये टाँगें खेंचे !
हैं प्रजातंत्र के बहुरूपिये -
भरते स्वांग विचित्र हैं !!

गाँव शहर की हवा है बदली
नये दौर की शिक्षा दीक्षा !
पुरुष और मज़बूत हुऐं हैं
नारी की ना घटी परीक्षा !
समभाव न अवसर समान हैं -
आतुर बनने को मित्र हैं !!

आँखों में अब हया कहाँ है
बदल गये सारे पैमाने !
बूढ़े नवजवान किशोर क्या
लबों पे सबके प्रेम तराने !
धर्म अर्थ काम बदला है -
बिखरा यहां वहां इत्र है !!

जब मान करोगे मान मिलेगा
हों सहयोगी सम्मान मिलेगा !
नज़रें भी हों पाक साफ तो
अपनों से अभिमान मिलेगा !

रुख पश्चिमी अगर अपनाया -
नहीं बचेंगें यहां चरित्र हैं !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

2

" माँ "

कहाँ गयी तुम राह दिखाकर
हमराही तो बहुत मिलेंगें !!

बगिया की क्यारी क्यारी में
भांति भांति के पौधे रौपे !
उन दूर बबूल के पेड़ों को
सुरभित चन्दन बन सौंपें !
कहाँ गयी तुम चाह जगाकर -
अरमानों के फूल खिलेंगें !!

काँटों में आँचल भी उलझा
बहा पसीना स्वेद कणों में !
उत्पीड़न को दिया भुलावा
बिरले मिलते सुखद क्षणों में !
कहाँ गयी वे आह छुपाकर -
दर्द ज़िगर का हम पी लेंगें !!

यों रही वारती नेह हमेशा
हाथ पकड़ चलना सिखलाया !
आँचल का वह प्यार दिया कि
यौवन ने सेहरा बंधवाया !
अब कहाँ गयी हो बांह छुड़ाकर -
कैसे वह पलना झूलेंगें !!

कितना अर्जन कितना संचय
कौन लक्ष्य प्राप्त करना है !
उस बंजारिन आशा के डेरे
अज्ञान दिए बैठा धरना है !
कहाँ गयी हो छोड़ अकेला -
जीवन में अब क्या पा लेंगें !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

3
हम हलधर हैं
खेत हमारे !!

हरी भरी धरती हम चाहें
सेवा दें बाहें फैलाये !
जो मिल जाये सिर माथे है
माँ का क़र्ज़ भुला ना पाएं !
मेहनत में पीछे ना हैं हम -
सदा कहाँ मिलती हैं बहारें !!

मिले नियति की मार हमेशा
कभी बाढ़ है कभी है सूखा !
खाद बीज की मारा मारी
विद्युत भी देती है धोखा !
अपने हाथ जग्गनाथ है -
अपना भाग खुद ही संवारें !!

कीट नियंत्रण महंगा पड़ता
भूले से मजदूर न मिलता !
कृषि प्रसाधन महंगे सारे
बिना क़र्ज़ के काम न चलता !
कभी मुआवजा हाथ न आता -
संकट से हमें कौन उबारे !!

मूल्य नियंत्रण उचित नहीं है
सदा हमें घाटे में रहना !
कांदा रोटी है नसीब में
आतप तो जीवन भर सहना !
धरती माँ की सेवा करते -
जीवन कटता इसी सहारे !!

पशुधन भी अब साथ नहीं है
पालन उनका साध्य नहीं है !
डेयरी अब व्यवसाय बना है
गौ सेवा अब हाथ नहीं है !
चारागाह सरकार ने बांटे -
पशु रंभाते हाय पुकारे !!

परिवर्तन की बेला आई
कुछ किसान भी हैं सौदाई !
खेती अब व्यवसाय बना है
कुछ ने बंगले कारें पाई !
योगदान राष्ट्रहित में सबका -
सब मिल माँ का क़र्ज़ उतारें !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

4

हम तो सही हैं
गम घटते नहीं हैं !!

आवरण अब है कहाँ
सब खेंच डाले !
अंग भंग कर दिए हैं
यों नोंच डाले !
हरित आँचल तार तार -
हम शर्मसार !
पछतावा उनको नहीं है !!

हम हुए काठ केवल
सूखते मजबूर से !
कुल्हाड़ियाँ -आरे चले
ये तो दस्तूर से !
प्रकृति पानी पानी तरसे -

सोचकर मेघा बरसते !
असंतुलन विघटन यही है !!

दंश से बोझिल है मन
आतप सहे हैं !
घाव वो देते रहे जो
छाया गहे हैं !
मनोहारी छवि है कहाँ -
कुरूपता बसती यहाँ !
अपने कृत्य उनको लगते सही हैं !!

शेष उम्मीदें हरी हैं
आस बाकी है !
वक़्त बदलेगा कभी
इतिहास साक्षी है !
हम सलीबों पर टंगे से -
नियति से भी हैं ठगे से !
डोर बंधती टूटती सी रही है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

5
दुत्कार नहीं बस प्यार चाहिए !!

हम बेज़ुबान सेवा में तत्पर
पालित रक्षित तुम पर निर्भर !
रातों को जागा करते हैं
डंडे लातें पत्थर हम पर !

वफ़ा हमारे खून में बहती -
मालिक बस दिलदार चाहिए !!

किस्मत का सब खेल यहाँ है
ग़रीब अमीर का भेद यहाँ है !
बंगला कारें और रईसी
भूखे प्यासे पले यहाँ हैं !
चौपहिया हम पर चढ़ते हैं -
बस ज़ीने का अधिकार चाहिए !!

आश्रय हमें कहाँ मिलता है
टुकड़ों पर जीवन पलता है !
कभी हड्डियां गले हैं पड़ती
मर मर कर जीना पड़ता है !
दुम हिला अभिवादन करते -
बस मार नहीं दुलार चाहिए !!

कुछ पलकों पर हमे बिठाते
कभी प्यार करे हौले दुलराते !
कुछ के लिए खेल है जीवन
छत से फ़ेंक हमें इतराते !
हम निरीह मौसम भी मारे -
मृत्यु नहीं उपकार चाहिए !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

6
**
राजनीति बदली है ना बदले हम //

कथनी और करनीं में अंतर
उद्बोधन सम्बोधन है मंतर /
कँही कँही जुमलों की भाषा -
कँही बोलियाँ बनी हैं बम //

जहर बुझे हैं हंसी ठहाके
किसको बेहतर कम हम आंके /
नेता सब अवसर तलाशते -
सच कैसा यह जन गण मन //

उम्मींदो की फेहरिश्त है
मिलती हमको किश्त किश्त है /
जनता के हिस्से में सचमुच -
थोड़ी खुशियां ज्यादा गम //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

7
मायके जाना राह पठाएँ
अपने तो अच्छे दिन आए !

सुबह शाम की थकन कहाँ है
सिर पर मेरे बम का गोला !
चाहे जहाँ जगह बना ले
खड़ा रह गया मैं बन भोला !
कठिन प्रवेश दरवाजे पाना -
खिड़की से ही राह बनाये !!

अंदर जाकर इन्हें निपटना
अपने को क्या लेना देना !
एक बार ये बोझा उतरे
फिर ठंडी साँसे हैं लेना !
हवाखोरी के दिन हैं आये -
कर लूँ टाटा बाये बाये !!

अपना हाथ जगन्नाथ हो
खुशियाँ चेहरे से टपकेंगी !
यार पुराने महफिल अपनी
रौनक होगी फिर संवरेगी !
भेज दिये सबको संदेशे -
उन्मुक्त जीयें पल मुस्काए !!

सुबह शाम हाज़िरी लगेगी
रौब जमा मैडम पूछेगी !
झूंठा मूंठा देगें चिट्ठा
हम सच बोले तो भी फरेबी !
हमें भरोसा नहीं वक़्त का -
जाने कब यह अवसर आये !!

8

" माँ तेरे में गले पड़ी हूँ "

अनार आम या एबीसीडी
गिनती हो या हो पहाड़े !
माँ तुझसे पढ़ना है मुझको
पापा तो गरजे दहाड़े !
टीचर जी बलैयाँ लें बस -
वह मुकाम पाने अड़ी हूँ !!

दादू रोज घुमाने जाते
कभी कभी योग सिखलाते !
खेल सभी चाचू के जिम्मे
रोज़ जीत के राज़ बतलाते !
वाद विवाद भाई से होता -
पैर जमा के यहाँ खड़ी हूँ !!

दादी सरगम है सिखलाती
सुर सधे कैसे बतलाती !
बुआ संग स्कीपिंग होता
डांस डांस में वो आज़माती !
सब कुछ मेरी झोली में हो -
इस जगह खुदगर्ज बड़ी हूँ !!

ट्यूशन में कोई ज़ोर नहीं है
होमवर्क का छोर नहीं है !
बस्ता लादे थके से हैं माँ
तुझसा कोई और नहीं है !
तेरा मेरा मेल यों ही ना -
इंतज़ार हो ख़त्म अड़ी हूँ !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

9
" तेरा हूँ तेरा रहने दे "

राह कठिन है दूर जलाशय
भूस्वामी है कहाँ सदाशय !
सर पर गगरी बगल में बहना -
कहाँ हमारे पास है आश्रय !
तपे दुपहरी शूल चुभा है -
बहता रक्त कहाँ थमा है !
माते मुझे शूल चुनने दे -
तेरा हूँ तेरा रहने दे !!

खाली पेट है अथक परिश्रम
खुशियाँ थोड़ी ज्यादह हैं गम !
हैं बापू गये परदेस कमाने -
लिपटे लिपटे आँचल से हम !

रोज़ मसखरी व्यंग बाण हैं -
लोगों की आँखे कृपाण हैं !
माते मुझे संग रहने दे -
मन की बातें सब कहने दे !!

ये हाथ अभी छोटे हैं मेरे
माँ मदद नहीं आ पाऊं तेरे !
अब दशा हमारी कब बदलेगी -
सोचूं जब तब साँझ सबेरे !
व्यथा आँखों में तेरे बसती -
अब टपरी भी हम पर हंसती !
माते बस अवसर मिलने दे -
दिन बदलेगें वह करने दे !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

10
अपना जब कांटें बोता है
दर्द बड़ा होता है !!

अपनी माँ को माँ ना माने
फटे हुए आँचल को ताने !
जग हंसाई शगल मान लो
सुर विरोध के जब तब ठाने !
चाल जहाँ शतरंजी होती -
अपनेपन को खोता है !!

तीखे बोल हो तंग नजरिया
झंडे गाड़े बीच बजरिया !
राजनीति में दखल रखे हों
टेढ़ी चाल कठिन डगरिया !
बड़बोलापन आदत है तो -
रोड़ा राह का होता है !!

अब फैल रहा आतंकी साया
कुछ आतुर बनने सरमाया !
लगे सुरक्षा कठिन दौर में
युवा जगत को है भरमाया !!
भले बुरे का सोच अगर ना -
चैन सभी का खोता है !!

धुंआ धुंआ हैं बम बंदूकें
हमसे ना हो कोई चूकें !
एकजुट यदि नहीं हुए तो
अपने सब बिखरे मंसूबे !
भीतर घात जहाँ होती है -
सच शत्रु सफल होता है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

कहीं आग और कहीं धुंआ
आ बरसो बादल !!

तन की पीड़ा मन की पीड़ा
तुम जानो हो !
तंत्र - मन्त्र परतंत्र सभी
तुम मानो हो !
लुटते - पिटते बाग़ उजड़ते -
मैले होते आँचल !!

अर्थ राज -काज व्यवस्था
किसे दोष दें !
ऐनक कुर्सी और नजरिया
विपद रोज़ दें !
महंगाई तंगी - तनहाई -
वादे कारा काजल !!

आग पेट की आग जेठ की
साक्ष धरा-आकाश !
लाठी गोली बहकी टोली
वक्त करे उपहास !
छुपी लाज़ अनकही बात -
मद बेहोशी पागल !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

भ्रमर की मस्ती भरी गुंजार से
हैं बोल सब तेरे अनूठे !!

बंद खिड़की मुंह चिढ़ाती
कल्पना कब रास आती !
दूर फैली घाटियों की वादियों में -
राह अँखियाँ भूल जाती !
धूप सी अठखेलियाँ कर -
बेबसी में चाह लूटे !!

जब भावना के तंग घेरे
जाल बुनते हैं घनेरे !
मीन सम प्यासे तड़पते मन -
हंसते रहे देखो मछेरे !
डगमगाती नाव उलझे ना भंवर में -
क्योंकर भला तूफान टूटे !!

है रूप खिलता रंग बदले
आस का ना छोर टूटे भाव उजले !
भेद कह दे हमसे -
केवल अर्थ उलझे !
यों विश्वास की प्रतिबद्धता में -
हुए कितने वचन झूंठे !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

13
हाथों से फिसला
आज और कल !

बरसों पुरानी
साझे की दीवार -
ढह गई !
पुराने रिश्तों की
कहानी रेतीली -
कह गई !
हाथों में लाठियां
ज़ंग लगी तलवारें -
चमक गई !
भारी पसरे
कमजोर दुबके !
सहम गये पल !!

लोगों की भीड़
अचरज में -
स्तब्ध खड़ी !
छोटी सी बात
घरेलू होकर -
इतनी बढ़ी !
पंचायते बैठी
पञ्चफैसले हुए -
उछली पगड़ी !
रुपया बहा

यहाँ वहां !
बदलेंगें कल !!

नयी धरी नींव
बनी ईमारतें -
अगल बगल !
कोर्ट कचहरी
उतरे चढ़े सीढ़ी -
नहीं रहे संभल !
टूटी दीवार
कायम है अभी -
नहीं गये बल !
मूंछों पे ताव
नहीं भरे घाव !
हैं अब विकल !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

14
माँ थोडा कुछ मुझे बता दे

सुबह शाम की हाये हाये है
टा टा है कभी बाये बाये है !
है खाना पीना सोना जल्दी -
रविवार ही हाथ आये है !

पिकनिक पिक्चर या सोना है -
आज वक्त को बता धता दें !!

आँखें लगता थकी हुई हैं
शायद तू छुप कर रोई है !
आ तेरी गोदी सो जाऊं -
बातों का एक चक्र चलाऊं !
पहले तू आँखें पढ़ती थी -
अब थोड़ा कुछ मुझे जता दे !!

पापा यों ही चिढ़ा करते हैं
बात बात अड़ा करते हैं !
भैया भाभी ना बदले हैं -
रोज़ रोज़ झगड़ा करते हैं !
अगले माह बुआ आ रही -
दुःख चेहरे से आज बिदा दे !!

बहू ने कुछ कड़वा बोला है
पोते ने क्या मुंह खोला है !
खाना पीना रास ना आया -
चढ़ा कहीं गेस गोला है !
डा. को बुलवाया घर पर -
कोई रोग हो उसे बता दे !!

पहले से दुबली लगती है
कौन कमी तुम्हें खलती है !
लोग यों ही हैं नज़र लगाते -
उम्र तुम्हें ना छल सकती है !

संध्या पूजा भजन भाव हैं -
चिंताओं को यों ही भगा दे !!

मुझसे क्या छुपना है माते
खुद से क्यों नाराज़ है माते !
कितनी देर टिकेगा गुस्सा -
तू तो खुशमिज़ाज़ है माते !
समय ने ग़र काटी चिकौटी -
थोड़ा तू भी उसे दगा दे !!

मैया सिर पर हाथ फेर दे
गीत पुराना कोई टेर दे !
कई दिनों का मै जागा हूँ -
मुझको मैया एक सबेर दे !
भूले से कुछ हुई हो गलती -
माँ उसकी ना मुझे सज़ा दे !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

15

आप में सब कुछ निहित है
आप बिन मैं कुछ नहीं !

सम्मुख आपके -
सावधान सी मुद्रा !

बचपन से है
पहले सुनो -
बाद में कहना !
अनुशासन जो है
धौंस है धमक है
थोड़ी सी चमक है !
आपकी बाहें फिर भी मैंने गही !!

सख्त औ कठोर -
लगते पाषाण से !
अपनापन तो है
जो कह दिया -
करो आगे बढ़ो !
कुछ पाना जो है
डाट है डपट है
थोड़ी सी गमक है !
आपकी मौजूदगी हर पल चही !!

खेल कूद हो -
ज्ञान संज्ञान हो !
आपसे से पाया
वाद विवाद हो -
विधि विधान हो !
आपने ललचाया
प्यार है विश्वास है
भविष्य का आभास है !
संभावनाएं कल की आपने कही !!

उद्यम व्यवसाय -
जब रहा असहाय !
आपने जगाया
हार क्या जीत क्या -
पाने की रीत क्या !
आपने सिखाया
धीर हों गंभीर हों
थोड़े से मीर हों !
अतीत के पन्नों की पलटी बही !!

जैसा भी हूँ -
मैं वैसा ही हूँ !
आपकी है छाया
आपसे आगे निकल -
जब बढ़ा आगे !
सम्मुख आपको पाया !
उपलब्धियां क्या कहूँ
सफलताओं को गहूँ !
आंधियां डिगा न पाई आप थे यहीं !!

हैं पथप्रदर्शक -
औ मार्गदर्शक !
सभी कुछ तो हैं
करने की ललक -
खुशियों की झलक !
आप से ही हैं
प्यार है दुलार है !

आपका उपकार है !
आपके ही दम से ये अमराइयाँ रही !!

| *रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "*

16
गुस्सा मतकर
कहाँ जाऊं माँ !
जहाँ कहोगी
वहां जाऊं माँ !!

कान पकड़ कर सुबह उठाती
हाथों में फिर ब्रश पकड़ाती !
मंजन कुल्ला मुंह धोना है -
तब जाकर नाश्ता पाऊं माँ !!

हाथ किताबें अनार आम हैं
पट्टी पहाड़ा सुबह शाम है !
सुंदर लेखन चित्रकारी है -
तब जाकर विश्राम पाऊं माँ !!

बोतल बस्ता स्कूल चले हम
पैदल पैंया हाथ थामे तुम !
राह चलत है कई हिदायतें -
कुछ भी बिसुरा नहीं पाऊं माँ !!

स्कूल बैग की चेकिंग होती
बेबस आँखें सांझ को ढोती !
लंच बाक्स में बचे न खाना -
कितना आखिर खा पाऊं माँ !!

खेल कूद का मौका मिलता
आँख मिचोली मन ना लगता !
क्रिकेट कबड्डी भय चोंट का -
जब तब आँचल लिपट जाऊं माँ !!

अब दोस्त रोज हंगामे करते
मुझ में भी साहस हैं भरते !
जब जब मैंने उधम करी है -
जी भर यों ही डाट खाऊं माँ !!

आज रंगीला स्वांग भरा है
मन में थोडा डर भी भरा है !
डाट पिटेगी प्यार मिलेगा -
फिर चूल्हे में मैं जाऊं माँ !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

17
कैसे कहें
दर्द अपना -
पीड़ा अपनी !!

उजड़ते रहे घर
थके हारे प्रयास !
बेबसी क्रंदन चीखें -
गूंजते अट्टहास !
सिसकती रही ज़िन्दगी -
वक़्त से ठनी !!

सदियों का साथ
वह उन्मादी बहाव !
छिन गये वे सारे
ठौर और ठांव !
घर में ही लुटे यों -
दिल हुआ छलनी !!

बंद खिड़की दरवाज़े
लटका दिए ताले !
दिल और दिमाग पर
अब तक पड़े जाले !
मज़हबी नारों से कहाँ -
बात है बनी !!

शरणार्थी वतन में
सब बिकी संपदाएं !
ढोते ही रह गये
बस अपनी व्यथाएँ !
सुखदा नहीं साथी बनी -
व्यथा मिली घनी !!

है घर वापसी का
सभी को इंतजार !
सूने दरीचों में
कब लौटेगी बहार !
राजनीति दावे करे है -
विश्वास पर ठनी !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

18
**

लांघ दी सीमाएं हमने
क्रुद्ध है जंगल !

घट रहा विस्तार
हो रहा शमन !
भयभीत हम
बढ़ते अतिक्रमण !
बादलों की बदमिज़ाजी -
अब कहाँ दलदल !!

कट रहें हैं पेड़
घटती हुई छाया !
दरिया नहीं बहते
धूप- सरमाया !

प्रकृति आँचल समेटे -
सुरक्षित नहीं कल !!

बढ़ रहा पलायन
भागते हैं दल !
हिरण नीलगाय हैं
प्यासे - विकल !
मन लुभाती हरियाली -
बन गई है छल !!

प्रेम प्यासे वन्य
गोलियां खाते !
अब ढूंढकर शिकारी
लाये वहाँ जाते !
नेता रहे चिंतित जहाँ -
मचती सदा खलबल !!

काम आये सर्वदा
मनुज के लिए !
बदले में हमें क्या
घाव ही मिले !
हथियारों से लेस जन-मन -
अब कहाँ निश्छल !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

19

“ कैद हो कर रह गयी
मुस्कानें सारी !!

मम्मी पापा
के दुलारे !
“क्रंच" में हैं (क्रंच)
थके हारे !
हम कमाने में जुटे -
खुशियाँ वारी !!

खाया पीया
क्या मिला !
वे क्या करें
हमसे गिला !
शाम को मिलकर गले -
वेदना पी डारी !!

हम बिखरे
परिवार क्या !
अब दे इन्हें
उपहार क्या !
आज अपने में हैं सिमटे -
यही खुशगवारी !!

दर्द अपने
सिर्फ अपने !
क्षितिज छोटे

छोटे सपने !
बहुत छोटे रह गये हम -
छोटी सी जिम्मेवारी !!

वृद्ध जन के
घर कहाँ !
बस आश्रम
जहाँ तहां !
अपनेपन को आज तरसे -
फिर मिली बेकरारी !!

हम औ तुम
मिल सके हैं !
कदम बस
हारे थके हैं !
नींद के आगोश डूबे -
टूटती सी है ख़ुमारी !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

20

" हम अमीर हो गये "

दो जून की रोटी तरसें
जाने कितने बेघर हैं !
फांसी का फन्दा स्वीकारें
यहाँ बिचारे हलधर हैं !

विश्व बैंक का तमगा हमको -
सचमुच हम अमीर हो गये !!

चंद धनी लोगों के हाथों
यहाँ खजाने क़ैद हैं !
सत्ता भी इन हाथों खेले
ये हरदम मुस्तैद हैं !
अर्थव्यस्था मजबूत हुई तो
कहने को मज़बूर हो गये !!

धंधे रोज़गार चौपट हैं
महंगाई की मार है !
प्रजातंत्र में जनता बेबस
सत्ता खेवनहार है !
वक्त की चाल बड़ी धीमी है -
सपने अभी खजूर हो गये !!

परिवर्तन कितना ठहरेगा
कहना अभी कठिन है !
अच्छे दिन की शुरुआत है
चाहत सब कमसिन है !
अभी परिश्रम बहुत है बाक़ी -
अभी कहाँ मशहूर हो गये !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

21

“ जीवन सूना तुम बिन "

बचपन से लेकर आज तक
चिंता सिर्फ यही है !
बच्चों ने कुछ खाया या ना
भूखे तो नहीं हैं !
जब तक मिली तस्सली ना -
कौर खाए गिन-गिन !!

खुद की चिंता यहाँ किसे है
माथे पर शिकन है !
छोटी सी दुनिया में अपनी
रहे मस्त मगन है !
अपने दुःख छोटे औरों से -
रात कटे तारे गिन !!

दुनिया भर की हैं हिदायतें
सुनना बहुत जरुरी !
छोटे से यों हम बड़े हो गये
स्नेहिल सुर संतूरी !
आशीषों की छाया में सदा -
रहे शुभ-शुभ चिंतन !!

रात देर तक बाट जोहना
कान धरे हैं द्वार !
अगर देर जो कहीं हो गयी
घर में पूछ-पुकार !

बने रहें नजरों के सन्मुख -
तभी कटे पल-छिन !!

हाथ कांपते शब्द अटकते
आँखें बरसाए कृपा !
फला-फूला परिवार देखकर
भूली मन की व्यथा !
सब स्वप्न सुनहरे होंगे पूरे -
दुआ यही हर दिन !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

22
**

" आरक्षण अब बना चुनौती खैर नहीं है /"

शक्ति -प्रदर्शन भीड़-भाड़ है
कुछ पाने का चढ़ा खुमार है /
टुकड़े-टुकड़े गगन हो रहा
चाह बन गयी अधिकार है /
आज सुनाई कुछ न देता -
बस पाना है टेर यही है //

यों घुटने टेक रही वार्ताएं
सबके माथे है चिंताएं /
कर्तव्य किसी को नहीं सूझता
अपना हक अपनी गाथाएँ /

जिन्हें दे रहे आज चुनौती -
अपने हैं वे ग़ैर नहीं हैं //

गगन चूमने चला धुआं है
फूलों में अब महक कहाँ हैं /
मन में आग लगाई ऐसी -
समाधान भी कहीं गुमा है /
प्रश्न अनुत्तरित अगर हो चले -
लगती देर -सबेर कहीं है //

आरक्षण की चाह सभी को
सूझे ना अब राह किसी को /
यहाँ भरे पेट भी पेट कूटते
ना भूखे की परवाह किसी को /
सरकारें अब संशय में हैं -
लगता उलट-फेर यहीं है //

संविधान अब खेल लगे है
प्रजातंत्र अब फेल लगे है /
संविधान की आड़ में नेता -
हम सब लगते ठगे-ठगे हैं /
आरक्षण थमना है जरूरी -
अभी हुई कुछ देर नहीं है //

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

23

“ यह भी क्या जीवन है अपना "

कूड़ा-करकट गंदा-मैला
हाथ लिया बचपन से थैला !
कचरा ही हम बीन रहे हैं
खाक छानते यों मन डोला !
माँ-बापू को रुपया देकर -
पीछे से पन्नी है पीना !!

यह भी क्या जीवन है अपना
शिक्षा-दीक्षा हाथ नहीं है !
सपनों का भी साथ नहीं है !
गली-कूंचे है ढेर कूढ़े के
मथना अब दिन रात यही है !
भूख-प्यास है दुत्कार है -
मर-मर कर हमको है जीना !!
यह भी क्या जीवन है अपना !!

बरसाती भी तान रखी है
बांसों पर ही बाँध रखी है !
गंदा नाला कल-कल बहता
यों ही जीयेंगें ठान रखी है !
थक-हार कर साथ बैठ कर -
हमें हलाहल रोज़ है पीना !!
यह भी क्या जीवन है अपना !!

पटरी पर बैठे यह सोचा
किस्मत में अपने है लोचा !
माल-मलाई हमको ना दी
रुखा-सूखा हमें परोसा !
हो ऊपर बैठे रहे एंठते -
जीवन जैसा दिया है जीना !!
यह भी क्या जीवन है अपना !!

कल को हम बदलना चाहें
हो कोई फैलाकर बाँहें !
सुबह-शाम की मच-मच भारी
हम भी कहीं मातरम गाएं !
हम भी चाहें बदले राहें -
रोज़-रोज़ फटा क्या सीना !!
यह भी क्या जीवन है अपना !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

24

जो पीछे धकियाते थे
आज लिए संत्रास खड़े हैं !!

कहीं भोज है
कहीं स्नान है !
होठों पर कहीं
मधुर गान है !
बदले से

कहीं तेवर हैं !
आज खिलाते
घेवर हैं !
चाह वोट की
राह वोट की !
परिवर्तन को आज अड़े हैं !!

कभी लीज पर
भूमि मिली है !
कभी मिले घर
छत हिली है !
कब्ज़े कर कहीं
हक़ छीना है !
वहां प्रशासन
मौन बना है !
गले लगायें
मंदिर ले जाएँ !
पत्थर खाने पास खड़े हैं !!

कहीं चोंट है
आरक्षण पर !
कहीं खोट है
मन के अन्दर !
सभी दलों की
रणनीति है !
दलित जनों से
करे प्रीति है !

सौंपे अगुआई
करे मनुराई !
गले लगाने गले पड़े हैं !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

25
बेबस आंसू बरस पड़े
क्या राज़ है !
जी प्याज़ है !!

मंहगा बीज मंहगा खाद
मंहगा पानी !
अथक परिश्रम वक्त दोहराए
वही कहानी !
कहाँ किसान
लेगा पनाह
जब गिरी गाज है !!

हैं मंडी- मंडी दौड़े- भागे
हाथ हैं खाली !
लागत-भाड़ा आढत काटी
देओ ताली !
रुपया कहाँ

हाथ लगता
बस क़र्ज़ साथ है !!

आलू- प्याज़ निभाए साथ
घर- घर का !
बज़ट संतुलित रहे नियंत्रित
हम सबका !
दो का बीस
उपभोक्ता तक
कैसा प्रयास है !!

बनती- बिगड़ी सरकारें हैं
असर प्याज़ का !
भीगी आँखें हम सबकी
क़हर प्याज़ का !
उत्पाद बढ़ा
निर्यात नहीं
खतरे में ताज़ है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

26
**

" उत्सव हैं मेले हैं "

उत्सव हैं मेले हैं
नोटों के खेले हैं !

खेतों में श्रम है
अथक परिश्रम है !
चूल्हे की आग है
चिमनियों का धुंआ -
थका हारा मन है !!
पेट काट भूल ठाठ
पाई पाई का हिसाब !
पानी के रेले हैं !!

उद्यम व्यवसाय है
बड़ी हुई आय है !
चांदी के चम्मच हैं
शिक्षा-दीक्षा ऊँची -
हम असहाय हैं !
महंगी डिग्री ऊँचा दर्जा
सफलता का यहाँ चर्चा !
असफल को ठेले हैं !!

राजनीति में दम
बिरला ही सक्षम !
वंशवाद चलता है
औ कहीं धरोहर -
शेष सभी मद्धम !
पढ़े लिखे थोड़े चढ़े
पा सीढ़ी आगे बड़े !
औरों को धकेले हैं !!

जनता से खेंच है
जनता को भेंट है !
टैक्स जो वसूला है
जीने से मरने का -
रहा क्या शेष है !
भूखे प्यासे अधनंगे
हाथ नहीं काम धंधे !
वोटों के झमेले हैं !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

27

हाथों में छड़ी
लहराए दो हाथ -
थे सब्ज़ बाग़ !!

सपनों की खेती
सबकी होती
नयी नयी आशाएं !
हमने बोया था
पाया क्या !
होंगी बस चर्चाएं !
जलसे होंगें -भीड़ जुटेगी
होगा राग अलाप !!

परदेसों की सैर
मनाओ खैर

नीति आयातित !
मंथन को जुटना
कुछ पाना है
सब लालायित !
मेरे मनमीत -मिला नवनीत !
नहीं नहीं संताप !!

चर्चा में दो बरस
मिली तरस
मंहगाई छम छम !
रीते रीते घट
प्यासे पनघट
निकले है दम !
सूखी धरती -चिंतित किसान
यहाँ बरसती आग !!

व्याख्यानों के मेले
सब ठेले
बस सुनना है !
लगने थे शिविर
पूछते फिर
क्या करना है !
एक मंच हो -ना प्रपंच हो
करने की हो ताब !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

सूखे की है मार पड़ी
नहीं है दाना पानी !

प्रजातंत्र ये तेरी
कैसी अजब कहानी !

हाथों में है काम नहीं
पेट कूटते बच्चे !
यहाँ वहां की भटकन
हम खा रहे गच्चे !
खटिया बैठ नहाते -
वही काम लें पानी !!

कहीं नेताजी की रैली है
हमें वहाँ है जाना !
जब नारे खूब लगायेंगे
दो जून का खाना !
आते जाते धक्के खाएं -
यही शेष जुबानी !!

दूजे घर का काम लिया
घरवाली सांसत में !
पारदर्शी नजरें चुभती
मनवा है आफत में !
सच तार तार चुनरी है -
लज्जित लगे जवानी !!

हैं गुहार लगाते बच्चे
कहीं द्वार खड़े हैं !
यों रुखी सूखी मिलती
वे नंगे पैर अड़े हैं !
अब छाले पैर पड़े तो -
उनसे बहता पानी !!

भाषण में विकास रमता
यहाँ टूटती आस !
वहां तेज दौड़ते रथ हैं
यहाँ पैरों की थाप !
हैं नेता बने खिवैया -
रखते बुद्धि सयानी !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

29
" जीवन के सब मूल्य खो गये "

माँ-बाप आतंकित होते
बच्चे अब दबंग हो गये !
सेवा भाव अब शेष कहाँ है
खा-पी-के- मलंग हो गये !
है पत्नी-बच्चे परिवार अब -
बाकी रिश्ते यों ही तो गये !!

अज दोस्ती की दीवारें टूटी
नीयत भी हो गई है खोटी !
अंतरतम रिश्ते हैं खोये
भूल गये है अर्थ लंगोटी !
आँखों में अब हया कहाँ है -
रिश्ते करवट बदल सो गये !!

गुरु-शिष्य में होड़ यहाँ है
नहीं अर्जुन तो द्रोण कहाँ है !
एकलव्य ढूंढे ना मिलते
अब गुरु दक्षिणा बची कहा !
गुरु गूगल के सभी भरोसे -
परम्परा को यों ही खो गये !!

लाइफ-पार्टनर अदलें-बदलें
खतरों में रिश्ते अब संभलें !
कंगन बिंदिया मांग नहीं है
हम फिसले तो ऐसे फिसले !
आँखों का सम्मान गुमा है -
ये कैसे हम बीज बो गये !!

बेटी के लिए वो नेह कहीं है
अब मातृत्व सम्मान नहीं है !
पाश्चात्य रंग में रंगे हैं ऐसे
नारी भोग्या लगे यहीं है !
विज्ञापन हैं ऐसे ऐसे -
अपनी संस्कृति हम ही धो गये !!

वक्त सदा परिवर्तन चाहे
हैं हम बैठे फैलाकर बाँहें !
शिक्षा संग परिवेश है बदला
पृथक पृथक चुनी है राहें !
घर परिवार बिखर रहे हैं -
अपनेपन को यों ही ढो गये !!

आज सभी की लाचारी है
इन्टरनेट अब महामारी है !
अच्छा बुरा सोचना होगा
जंग अभी रखनी है जारी !
यों हाथ नतीज़े छूटेंगे ही -
हम कुम्भकर्ण से यदि सो गये !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

30

क्या खोया क्या पाया
वक्त नहीं संभला रे !
कोई नहीं गिला रे !!

यहाँ-वहां को भाग-भाग कर
मुस्कानों को साध-साध कर !
यों आकर्षण में बंधे रह गये
फूल-पराग का साथ-माथ धर !
हम बयार संग बंधते-बिखरे -

कैसी मिली सज़ा रे !!
कोई नहीं गिला रे !!

साँझ-साँझ को ताक-ताक कर
यों चित्र उकेरे कैनवास पर !
यहाँ रंगों की तूलिका छूट गई
दस्तक दे तुम थे द्वार पर !
हम-तुम तुम-हम एक हो गए -
पगली हुई दशा रे !!
कोई नहीं गिला रे !!

रात-रात भर जाग-जाग कर
आलिंगन में बाँध-बाँध कर !
तृषित अधर की प्यास बुझाने
सलिल सरित के घाट-घाट पर !
एक-दूजे को मथा किये हम -
बुझती कहाँ तृषा रे !!
कोई नहीं गिला रे !!

पल-पल को यों बाँट-बाँट कर
बिखरे पन्ने छांट-छांट कर !
वक्त को बांधें कोशिश ये की
स्मृतियों के घाट-घाट पर !
चाहे-अनचाहे संभले- फिसले -
बदली हुई दिशा रे !!
कोई नहीं गिला रे !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

31

" राजनीति के भंवर में योगा "

नहीं नवीन है बड़ा पुरातन
रखी धरोहर थे ज्ञानीजन !
गुफा कन्दराओं से आ बाहर
सदा जगाया है अंतर्मन !
अंतर्शक्ति बाह्यशक्ति को
पहनाया सदा नया है चोगा !!

योगा से अतिलाभ मिला है
सबका ह्रदय कँवल खिला है !
है धर्म कहीं न आड़े आता
जग-समर्थन तभी मिला है !
श्वासों पर सब करें नियंत्रण -
दूर भगाएं तन-मन रोगा !!

राजनीति है टिकी ओम पर
घर में ही अंतर-विरोध है !
मन बदले हैं आड़ धर्म की
कई दलों की सोच वोट है !
भरमाओ जन-मानस को तुम -
परिवर्तन होना है होगा !!

योगा की है जान ओम बस
प्रणवाक्षर है नाम ओम बस !
प्रकृति में यह समाविष्ट है

अन्तरिक्ष में ध्वनि ओम बस !
ब्रम्ह्नाद है सुर-निनाद है -
समझे तो मुक्त-धर्म है योगा !!

अब दुर्बलता को दूर है करना
मन में एक शक्ति है भरना !
तनाव-मुक्त हो सारी दुनिया
अब शंख-नाद यही है करना !
ओम नाम की अलख जगी तो -
“शांति-वाद" श्रेयस्कर होगा !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास “ नीरद “

32
“ व्यक्तिवाद अब पनप रहा है "

व्यक्तिवाद पर राजनीति है
दलबंदी की बात नहीं है !
हमसे ऊपर भी कोई हो
सह लेंगें औकात नहीं है !
आगे तक चले नाम हमारा -
वंशवाद यों टहल रहा है !!

भीड़-भाड हो रेलम पेला
वही घटे जो हमने बोला !
ताक़त दौलत सरमाया है
बांटें हम अपनों में मौला !

बिना डिग्री के सर्जन हैं पर -
चीर फाड़ तो शगल रहा है !!

मगरमच्छ के आंसू लेकर
हम ग़रीब को गले लगाते !
वोटों तक बस पहुँच हो अपनी
इतनी सहानुभूति जतलाते !
जय किसान का नारा काफी -
आसमान भी पिघल रहा है !!

भविष्य हमारा है उज्वल तो
भविष्य देश का भी सुधरेगा !
अफ़सरशाही ख़त्म करेंगें
केवल जन -नायक उभरेगा !
बेहतर छवि बनाना है बस -
ध्येय यहीं तक ठहर रहा है !!

नीतीश ममता जयललिता जी
सभी देखते इक सपना जी !
प्रधानमन्त्री पद के करीब हैं
कितना और अभी तपना जी !
लालू और मुलायम जी का -
रथ इसी दिशा में सरक रहा है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

33

“ बोझा तो बचपन से लादा "

सर पर बोझा हम रखते हैं
सर इसीलिये ऊँचा रखते हैं !
भीगे चने ज़ेब में रखकर
वक्त यों ही काटा करते हैं !
भूख से लड़ना परम लक्ष्य तो -
श्रम दर्शन है मुस्करा ज़रा सा !!

ये बोझा सर पर लाचारी है
नियति यहाँ थकी-हारी है !
शिक्षा से नाता सीमित है
कल की चिंता भी भारी है !
हँसता-गाता समय चिढ़ाता-
कर लें कल का ठोस ईरादा !!

सूख-दुःख का बंटवारा कर लें
वक्त को हम आग़ोश में भर लें !
दुःख देर तक देहरी टिकता
इसीलिये मन कड़ा भी कर लें !
ॠतुएँ मौसम कहाँ ठहरते -
मन रहता प्यासा का प्यासा !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास “ नीरद “

34

“ मित्र मेरा नौरंगीलाल "

कोई कहता पंडित उसको
कोई कहता उसको लाला !
कोई बनिया-वैश्य कहे तो
कोई बोलता उसको ग्वाला !
सब में रत है नहीं विरत है -
चक्रधारी सा करे कमाल !!

कई डिग्रियां पास है उसके
यों भी है थोडा वाचाल !
काला कोट पहनकर घूमे
विधिवेत्ता सब करे ख़याल !
भीड़-भाड़ में घिरा है रहता -
महिमा-मंडित करे दलाल !!

नामचीन है नगर का भैये
है निवास पर रेलम-पेल !
नेता-अभिनेता नतमस्तक
यहाँ सभी रंगी है खेल !
खाली हाथ कोई ना जाये -
समरसता है एक मिसाल !!

नो एंट्री है कमजोरों की
यहाँ सत्ता के कई दलाल !
कई कंठ पर छुरियां चलती
न्याय लगे यहाँ बदहाल !

लायसेंसी हथियार हाथ हैं -
बाडीगार्ड भी रखे ख़याल !!

यहाँ चैरिटी की खातिर है
महिलाओं की भीड़ उमड़ती !
सामाजिक संस्थाएं लेकिन
यहाँ दान को सदा तरसती !
रुपया राह तलाशे खुद है -
चाहे कोष लगे नवताल !!

माँ-बाप का साथ न भाये
फार्महाउस पर हैं खुशहाल !
ज़िन्दगी यहाँ खिलंदड जैसी
रोज बजाता वक्त है गाल !
सब-कुछ मुट्ठी में कर लेंगें -
छूटे का है नहीं मलाल !!

हर चुनाव का प्रत्याशी है
सभी पार्टियों से है मेल !
राजनीति नेता करते हैं
उसके लिए है तो बस खेल !
है किसी हवाले करे हवाला -
रब हवाले है मालामाल !!

जलसों में सबसे आगे है
हर विवाद से रहता दूर !
अपने लिए समय नहीं है
निभाए सब जग के दस्तूर !

पल-पल यहाँ केश करता है -
सदा चले शतरंजी चाल !!

पकड़ बड़ी मजबूत है उसकी
नज़र बड़ी पैनी है यार !
एक घाट करे शेर औ बकरी
फिर शिकार को हो तैयार !
जीवन है गतिमान अभी तो -
शून्य का किसको यहाँ ख़याल !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

35

" मुस्कानों ने पीर भुला दी "

अपनों से लड़ते आये हैं
कभी भूख-गरीबी से !
सदा यहाँ लुटते आये हैं
धोखे और करीबी से !
धूल-धूसरित हम और पल थे -
खाते रहे यहाँ गुलाटी !!

हर पल जीना सीखा हमने
अंधियारे-उजियारे में !
रंग-बिरंगी खुशियाँ ना दी
आसमान के तारों ने !

चीरहरण हुआ उम्मीदों का -
नज़र वक्त की दुशासन सी !!

काँटों में पलकर भी हमने
काँटों से ना बैर किया !
खुशबू की चाहत लेकर भी
फूलों से ना हेर किया !
कभी बहारें रही फ़िदा ना -
वक्त पीटता रहा मुनादी !!

एक आशियाँ नील गगन है
हम तो मस्त फकीरी में !
दो जून की खुशियाँ पाई
मेहनत और मजूरी में !
उन्मुक्त हंसी जब बनी संगिनी -
मजबूरी की नीव हिला दी !!

जीवन का दर्शन क्या जाने
माँ की सीख निराली !
माँ के आँचल में इतराकर
सारी खुशियाँ पाली !
वक्त से अनबन सदा रही है -
आशाओं ने सही दिशा दी !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

खरी-खोटी बिन चैन न पड़ता
चेहरों का है रंग उतरता !
एक-दूजे को नंगा करते
फिर भी इनका मन ना भरता !
सरेआम या बीच सभा हो -
नेताजी बड़े उद्दंड हैं !!

भाषण में उतरे ज़बान है
कह दें फिर बिसरे बयान हैं !
बेनक़ाब जब करे मीडिया
अर्थ-अनर्थ का होवे गान है !
जनता सदा बिचारी समझो -
इनके चमचे सभी मुस्टंड हैं !!

खाते-पीते काम न रुकता
पेपर्स-पनामा हाथ न रुकता !
जब चुनाव में लगे करोड़ों
फिर अरबों से मन ना भरता !
मनमाने बदलाव करें ये -
सज़ा नहीं चाहे दंड हैं !!

मानहानि इनकी भी होती
और अदालत बात पहुंचती !
न्याय इसे क्राईम ना माने
अर्जी जाकर यहीं अटकती !
मनमाफ़िक फैसले चाहें -
चाह इनकी कितनी प्रचंड है !!

जनता का यहाँ मान नहीं है
क्या रोड़-रेज़ अपमान नहीं हैं !
खुले आम हथियार चले हैं
जन-जीवन का ध्यान नहीं है !
गवाह सभी मुठ्ठी में होंगे -
कैसा यह प्रजातंत्र है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद

37
" नये-नये रिश्ते लगे न डीप
जैसे लिव इन रिलेशनशिप !!

नये-नये परिवेश के हैं
बदलते नये चलन !
समाज न स्वीकारता
स्वीकारते हैं हम !
कहीं हैं मजबूरियां
नवीनता का दम !
कानून की शरणागति
बस चाहते हैं हम !
परिवार से नाराजगी -
है अपनों से खीज !!

रिश्तों की आड़ में है
नये रिश्तों की चाह !
शादीशुदा या क्वारे

है एक सा बर्ताव !
प्यार का यह खेल यहाँ
सच शर्तों के ठांव !
दुखभरी दोपहर में
ज्यों शीतल सी छाँव !
अब टूटते -बिखरते हैं -
क्यों जल्दी गये रीझ !!

सोशल मिडिया है यहाँ
अब नये-नये फ्रेंड !
बिखरता समाज दिखे
यों नये-नये ट्रेंड !
शिक्षा ने दी समृद्धि पर
संस्कृति लगे न ग्रेंड !
अब प्यार चाहें सच्चा
तो बजना है बेंड !
परिजन पराये लगे -
करें अकेले ही स्वीप !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

38

" सांसत में न्यायालय भी "

मनमानी नेताओं की
सांसत में न्यायालय भी !

कहाँ है सरकारें गिराना
कहाँ है सरकारें बचाना !
नेताओं की खरीद-फरोख्त को
कितना अंकुश है लगाना !
जनता चाहे भूखी-प्यासी -
खाते माखन पीते घी !!

दल-बदल पर रोक न चाहें
निष्ठा की नित बली चढ़ावें !
कौन विधेयक पास करावे
मनी-मनी फिर कहाँ से पाएं !
बात उसूलों की ना होती -
बिकते आज ज़मीर भी !!

जन-अदालत सभी चलाते
मजमा अपना सभी लगाते !
अपराध यहाँ संरक्षण में -
मंगलराज की गाथा गाते !
बस चुनाव भी दंगल है -
बाद में है पहलवानी जी !!

बदला-बदला आज समां है
राजनीति को खबर कहाँ है !
संविधान का कवच पहनकर
बस नेता खेले खेल यहाँ है !
पेंशन भी अब हुई ज़रूरी -
वेतन भी कम पड़ता जी !!

न्याय-पालिका बेचारी है
यहाँ विधायिका भारी है !
संविधान से सभी बंधे पर
महिमा न्यारी-न्यारी है !
न्यायालय का बंधा दायरा -
इसीलिये थका-हारा भी !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

39
" डिग्री-डिग्री खेल रहे हैं "

राजनीति में रंग न भाये
काजल-कीच यहाँ लगाये !
हम रंगों से खेले होली
यहाँ धवल हैं दाग सजाये !
पी एम की डिग्री झूंठी -
इसे केजरी ठेल रहें हैं !!

जंगलराज कहाँ नहीं हैं
नीतिश तो कहे यही हैं !
यू पी दिल्ली मारा-मारी
उनकी खुलती कहाँ बही है !
एक-दूजे के दोष गिनाकर -
कचरा यहाँ उड़ेल रहे हैं !!

सब नेता कारोबारी ठहरे
इन पर कौन बिठाये पहरे !
वंशवाद भी पनप रहा है
यू पी या बिहार भी ठहरे !
प्रजातंत्र की मार है भैये -
जन-जन सब कुछ झेल रहे हैं !!

हों मजदूर कृषक जानिये
बाकी की मजबूरी मानिए !
उद्यमी या नेताजी ठहरे
ड्राइंग-रूम की सज्जा मानिए !
शिक्षा की दरकार सभी को -
डिग्री पास या फेल रहे हैं !!

कौन कसौटी जांच करेंगें
डिग्री-मापी ईजाद करेगें !
किसकी झूंठी किसकी सच्ची
किस-किस की फरियाद करेगें !
यूनिवर्सिटी पर आन बनी है -
कहाँ उन्हें हम धकेल रहे हैं !!

सत्य आचरण हुआ जरूरी
स्व-आकलन से ना दूरी !
नैतिक शिक्षा सब अपनाये
बढ़े न अंतर्मन से दूरी !
आँखों से सम्मान है उतरा -
इतना पसरे-फैल रहे हैं !!

40

" क्रिकेट हो गया खास है "

अब भूख दिखे ना प्यास है
क्रिकेट हो गया ख़ास है !!

गरीबी से जनता लडती है
सपनों में जीती रहती है !
मुद्रा पास नहीं है फिर भी -
उम्मीदें इनकी झकास है !!

डंडे यहाँ बन गये स्टम्प हैं
हाथ पैर में भले कंप है !
भूल गये सब खेल पुराने -
सबके अपने ही मिजाज हैं !!

मलखम्ब कबड्डी गुम खो-खो
शेष खेल रह गये सो-सो !
आकर्षण क्रिकेट में केवल -
दौलत-शोहरत सभी साथ है !!

क्लबों से बाहर खेल है निकला
इसीलिये जनमानस बदला !
पठानबन्धु या पंड्याबंधु-
इन चेहरों से जगी प्यास है !!

प्यासे की परवाह किसे है
हरी लुभाती घास सबे है !
शोर-शराबा यहाँ डांस है -
क्या गरीबी का उपहास है !!

गलियों में चौके-छक्के हैं
नेता सब हक्के-बक्के हैं !
किरकिट राजनीति से आगे -
कितना यह सार्थक प्रयास है !!

रणजी में दर्शक ना मिलते
और मैच में सब हैं पिलते !
कैसा है यह शौक हमारा -
प्रायोजक ही यहाँ ख़ास है !!

किरकिट खेल है बना भरम है
लुटना दर्शक का धर्म है !
आयोजक हों चाहे खिलाडी -
जेबें भरने में उस्ताद हैं !!

कुछ लोग मनाते रोज दीवाली
करते हमरी जेबें खाली !
खेल देखना शौक हमारा -
वे नोटों के फकत दास हैं !!

सच उमड़ा पारावार यहाँ है
हल्ला-गुल्ला शोर जवां है !

हम अपनी खुशियों में सिमटे -
बूढ़े सब घर पर उदास हैं !!

अब युवक-युवतियां दीवाने हैं
सबके अपने पैमाने हैं !
मेहनत है संघर्ष यहाँ पर -
मंज़िल यहाँ कहाँ पास है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

41

" मुस्कराते रहे हम "

कठिनाइयाँ हुई बेदम
मुस्कराते रहे हम !

भूख देखी प्यास देखी
धूप की मिठास देखी !
सच रौशनी परायी थी
उजियारे से बात न की !
अंधियारे में राह दुर्गम -
कभी नहीं हारे हम !!

रात देखी अंधियारा भी
देखा भोर का तारा भी !
लैम्पपोस्ट संदेशा देता
आस का गलियारा भी !

उम्मीदें माँ के आँचल में -
गुनगुनाते रहे हम !!

उम्र दौड़ी लिए हथोडी
चुनते रहे कौड़ी-कौड़ी !
शिक्षा बनी भगिनी जब
हमने कई रेस दौड़ी !
गिरते-पड़ते जो भी पाया -
हम खुश रहे हरदम !!

हास देखा व पास देखा
कहीं-कहीं परिहास देखा !
मन में कोई शिकन न आई
कभी-कभी उपहास देखा !
कभी नहीं विश्वास खोया -
आगे बढ़ते रहे हम !!

जीत देखी व हार देखी
जीवन में तकरार देखी !
पतझड़ देखे सावन देखे
हमने भी बहार देखी !
माँ ने कहा -थोडा बहुत"
यों जीते रहे हम !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

42

" राजनीति कैसा प्रपंच है "

लालू-बाबा एक मंच पर
कैसा है संयोग !
सुर विरोध के बदल गये हैं
भूल गये प्रतिरोध !
अपने-अपने स्वार्थ सभी के -
अर्जन सबका मूलमंत्र है !!

बाबाजी व्यवसायी ठहरे
क्यों बैर वे पाले !
लाभ नहीं जी दान चाहिए
मुस्कानों के हवाले !
प्रतिस्पर्धा से हार ना माने -
उनके सब प्रोडक्ट टंच हैं !!

है रेल-नीर केंद्र ने भेजा
हमने कब माँगा !
भंडारण की जगह भी देते
यह प्रश्न भी टांगा !
अब सूखा है बुंदेलखंड जब -
यह विरोध का अजब ढंग है !!

दीदी की घनघोर परीक्षा
अंत हुआ उसका !
पंगेबाजी वहां सरल कहाँ
विपक्ष रहां दुबका !

मिनी पाकिस्तान वहाँ पनपा -
जहाँ बजती रहे मृदंग है !!

आज "अगूस्ता" बना बवंडर
प्रतिपक्ष नहीं बैचेन !
हैं सत्ता में बडबोले ज्यादा
छीन सके ना चैन !
यों संसद पूरी सांसत में है -
किसको पड़ना यहाँ पन्च है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद

43

" प्यास बुझेगी कब सरकार "

तृषित जनों की यही गुहार
प्यास बुझेगी कब सरकार !

बूँद-बूँद जीवन तरसे है
घाट-घाट हैं प्यासे !
पोखर नदिया औ कुए भी
हैं गहरे और उदासे !
पग-पग धरती फटती जाये -
आग उगलती बहे बयार !!

रैन- बसेरे हैं सब सूने
हैं सूने-सूने नीड़ !
गांवों से हो रहा पलायन

शहर-शहर है भीड़ !
पग-पग पर संघर्ष है जारी -
और तपन की पडती मार !!

बाग़-बगीचे प्यासे-प्यासे
हैं फुलवा भी मुरझाते !
धरती आसमान सब तपते
जंगल धुआं-धुंआ से !
नये-नये पौधे फिर रोंपे -
करनी होगी सार-संभार !!

बोगी भर-भर पानी भेजा
फिर भी घट-घट रीते !
प्यास बुझाना है जन-जन की
हम रेल-नीर ना चीतें !
जल-संसाधन जल-नियंत्रण -
अब समय की है दरकार !!

पानी-पानी देश कर रहा
हों नेता पानी-पानी !
ये भ्रष्टाचार में गोते खाते
प्यास बड़ी अनजानी !
पृथक-पृथक सच प्यास जानिये -
अब भली करे करतार !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

" सब कारा-कारा है "

आँखों में काजर न काढो
सब कजरारा है !
श्वेत-धवल अब रहा नहीं कुछ
सब कारा-कारा है !

जो कपास सी राजनीति थी
सुरमई-सुरमई लागे !
औरों के हित साध रही थी
अपना हित अब साधे !
चरखा-खद्दर छूट गया है -
सब वारा-न्यारा है !!

जो स्वदेश की प्रीत जगी थी
मुरझाई-अकुलाई सी है !
है विदेशी बाज़ार सजा अब
गली-गली भरमाई सी है !
चिमनी कहाँ धुँआ उगलती -
श्रम हारा -हारा है !!

जो सपने थे आज़ादी के संग
अलसाये-अलसाये चेते !
जय जवान और जय किसान ही
बस रहे देश को खेते !
सूखा है कहीं आग लगी है -
तन-मन बंजारा है !!

जो देश संग अपनापन था
रंग उड़ा है उसका !
जयकारे में उलझे हैं हम
यों कातर भारत माँ !
अब देश किसे प्यारा है !!

जो देश का कर्ज है हमपे
कैसे वो उतरेगा !
देशद्रोह घुट्टी में मिलता
क्या यह सब बदलेगा !
क्योंकि देश हमारा है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

45

" भ्रष्टाचार अब पसर गया है "

पैदा हुए तो अस्पताल में
नवजीवन के सुरताल में !
वार्डबॉय क्या सिस्टर डाक्टर
शुरूआती के कदमताल में !
अंदर तक कुछ लहर गया है !!

शिक्षा परिसर में देखा है
खिंची हुई लक्ष्मण रेखा है !
गरीबों को शिक्षा सरकारी

दूजों का चलता सिक्का है !
अनुदान उसी डगर गया है !!

ऊँची शिक्षा हाथ न आये
पाने को जुगाड़ लगाएं !
बैंक-लोन आसान कहाँ है
ले-दे के हम हथिया पाए !
अवसर लगता ठहर गया है !!

नहीं नौकरी आसां है जी
घिसती चप्पल घिसते हम भी !
घर-जमीन-जेवर बिक जाते
सरकारी मिलती है तब ही !
जीवन में ये भंवर नया है !!

यों वोटों में देते-लेते हैं
हम ऐसे ही नेता चुनते हैं !
लाखों का लेखा होता है
हम बाद में सिर धुनते हैं !!
यही जहर तो गहर गया है !!

भेंट चढ़ गया तंत्र सरकारी
भ्रष्टाचार बना महामारी !
कोई अछूता नहीं रहा अब
खेल हो गया सब पर भारी !
सबके लिए यह शिखर नया है !!

अब बड़े-बड़े घोटाले होते
रत-दिवस हम श्रम को ढोते !
नेता सबसे होशियार हैं
दौलत की ही फसल को बोते !
आज आमजन सिहर गया है !!

है विधायिका सब पे भारी
कौन करे आगे तैयारी !
नेता सब आकंठ हैं डूबे
भ्रष्ट नशे की चढ़ी खुमारी !
ईमान आज यहाँ बिखर गया है !!

कब तक हमको सहना होगा
इस प्रवाह में बहना होंगा !
सच तूफानों से टकराने का
आज होंसला रखना होगा !
अब कठिन चाह है डगर नया है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

46

" रंग प्यार के यहाँ हज़ार "

मात-पिता संग प्रीत हमारी
भाई-बहन की रीत हमारी !
रिश्तों का यहाँ जाल बुना है
उलझे ना यही भीति हमारी !

पैरों में झुकना सीखा है -
आशीषों की है भरमार !!

हुए किशोर तो हमने जाना
प्यार का दूजा भी पैमाना !
रंगों की महफ़िल सजती है
शमा पे मंडराए परवाना !
ख़्वाब सजा करते आँखों में -
बहती है पल-पल मधुधार !!

वयःसंधि के खेल निराले
खुलते बंद द्वार के ताले !
अलि पराग पर मंडराता है
मौसम भी गलबहिंयाँ डाले !
बाँध सके मन जितना बांधें -
वक्त परीक्षा को तैयार !!

कहीं तुला पर प्यार तुले है
कहीं आँखों में योंही पले है !
छुपकर आँख मिचोली करता
कहीं हाथों से ये फिसले है !
सभी प्यार में उलझे-उलझे -
प्यार की है सबको दरकार !!

है गहराई प्यार की गहरी
छवि लगती है सदा रुपहरी !
थोथा प्यार घना बाजे है
प्यार की सीमाएं ना ठहरी !

प्यार कभी लगता है नादाँ -
कभी मनचला है सरकार !!

प्यार कहीं आकर्षण भर है
प्यार कहीं बहता निर्झर है !
प्यार आड़ में द्वन्द कराये
कहीं पल्लू से बंधता भर है !
मीठी चाह सभी रखते हैं -
कभी मिले यहाँ फटकार !!

प्यार-प्यार तो सब करते हैं
प्यार में सब जीते-मरते हैं !
कड़ी परीक्षा इसमें होती
इसीलिये गिरते-पड़ते हैं !
प्यार है संबल सच्चा गर है -
सच्चे प्यार की है मनुहार !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

47
" इंतजार की मार बड़ी है "

बचपन से ही बोझ लदा है
हुए किशोर तो और बड़ा है !
आशाएं परवान चढ़ी हैं
मात-पिता का असर बड़ा है !

शैशव आया निकल गया कब -
वक्त मारता यहाँ तड़ी है !!

सदा हमें यह सीख मिली है
दबी उम्मींदे जीत मिली है !
लक्ष्य कोई निर्धारित करता
हमें यही तो रीत मिली है !
यों दबाव में जीते पल-पल
सदा भविष्य की हमें पड़ी है !!

मेरिट की रटना लागी है
मेरिट से भरता ना जी है !
उठक-बैठ या जगना-सोना
ख्वाबों में भी मेरिट ही है !
मेरिट में हों टॉपर भी हों -
यही समस्या आन खड़ी है !!

रहे नहीं सपनों के मेले
भूल गये हैं खेल-हिंडोले !
ध्येय बना है शिक्षण केवल
दीमक सा किताब संग खेलें !
मुस्कानों से मित्र मिले हैं -
मित्र हों सच्चे आज पड़ी है !!

एकलव्य हैं कुछ हैं अर्जुन
लक्ष्य हो गया आज कठिन !
परिजन बांधें उम्मीदों को
बाँध रहें हैं हर पल-छिन !

धैर्य सफलता सदा दिलाये -
हारे को ही मार पड़ी है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

48

" स्वामी जी सत्ता संग खेले
कुँए पे बैठे बलिया डाल " !!

अंदर हो या बाहर बैठे
ख़ामोशी से ज्ञान समेटे !
खेल बनेगा या बिगड़ेगा
इसके अंतरज्ञान को फेंटे !
शब्दजाल बुनकर फेकेंगे -
चाहे उठता रहे बवाल !!

आरोंपो का चलता खेल
छुक-छुक करती चलती रेल !
साक्ष्य ढूंढने वाले ढूंढे
ये दोषों को देते ठेल !
खाने वाले माल खा गये -
ये तो देते हैं बस ताल !!

दांव-पेंच कानूनी जाने
छेड़े सदा नये तराने !
सागर की लहरों से खेले
और मस्तियाँ जी भर छाने !

उठा-पटक में माहिर जानो -
बन जाते दूजे की ढाल !!

सत्ता का सुख आकर्षण है
झांके दूजे का दर्पण है !
दुनिया सदा फरेबी दिखती
मनचाहा इनका दर्शन है !
सत्ता ने बहकाया ऐसा -
जैसे भंगिया करे कमाल !!

सच्चाई का पूरा वादा
और मुल्लमा चढ़े है ज्यादा !
माफी अंगीकार नहीं है
रखे सदा "अटल " इरादा !
कहे से पीछे ना हटते हैं -
कहे का करते नहीं मलाल !!

सरकारें हैरान भी होती
फिर भी इनको अकसर ढोती !
भूल सदा भय पैदा करती
गंगा सारे पाप न धोती !
धर्म राजनीति से विलग न होगा -
चाहे आ जाए भूचाल !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

“ आज नशे का असर बड़ा है "

छत्तीसगढ़ में मार पड़ी है
जनता की गुहार बड़ी है !
लामबंद हो बैठे हाथी
गाँवों में चीत्कार पड़ी है !
टूट रहें हैं आज घरोंदें -
जंगल जंगल नशा चढ़ा है !!

“धाने-खुशबु" नशा बढ़ाये
जंगल में महुए बोराए !
देशी मद्यपान की लत है
वनवासी बस डूबे जाएँ !
जंगल से हाथी गांवों में -
मद्यपान का कहर बड़ा है !!

पीना लगता मूल-मन्त्र है
हारा हुआ यहाँ तंत्र है !
मस्ती में गजराज क्या सब हैं
समता सच्चा गणतंत्र है !
वन विभाग का अमला हारा -
जनजीवन पर असर पड़ा है !!

वन-गांवों में हुई मुनादी
महुआ घर में ना रखना जी !
देशी-दारू असर करे है
पी जाओ सब ना बचना जी !

हाथी-दल जब सूंघ रहा हो -
भय का ही माहौल खड़ा है !!

नशाबन्दी सब दूर जरुरी
आज हो गई है मजबूरी !
गाँव-शहर माहौल एक-सा
दिल से दिल की बड़ी है दूरी !
सबके चरित आज बदले हैं -
पल-पहर मदमस्त खड़ा है !!
रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

50

" राजनीति में करे कमाल "
मेरा बेटा छेदीलाल
राजनीति में करे कमाल !!

पढ़ा-लिखा नहीं है ज्यादा
कारोबार करे है वादा !
अपने गम बिसुरा देता है
फिक्रमंद दूजों का ज्यादा !
दिखने में सीधा-सादा है -
खादी-खद्दर टेढ़ी चाल !!

अपनी टोपी दूजे का सिर
बातें करता बड़ी कारगर !
झंडों से परहेज नहीं है

खोना नहीं चाहता अवसर !
चारा क्या देश खा जाएँ -
उसे ओढ़नी उनसे शाल !!

कड़वा तीखा ऊँचा बोले
गरज पड़े तो मिसरी घोले !
खाकी वर्दी से न डरता
ये नेता सदा फूल से तोले !
राजनीति में हंसी परायी-
अपने हाथों लड्डू-थाल !!

कहाँ छेद करना बतलाओ
कहाँ नहीं कमियां गिनवाओ !
तोड़-फोड़ साजिश सब जाने
बहकेगा पल में बहकाओ !
जो करना है कर गुजरेगा -
पीछे करता नहीं मलाल !!

मिला टिकट ना असरदार है
काम बनेगा व्यवहार है !
सांसद हो विधायक मंत्री
टलती कभी नहीं गुहार है !
बढ़ा टिकाऊ टिकना जाने -
दिखता रहे सदा खुशहाल !!

परदेसों का भ्रमण कर लिया
हरियाली से मन भर लिया !
साध कोई बाकी ना रहती

जिसको चाहा नमन कर लिया !
थोड़े से ना रहता राजी -
ज्यादह के लिए करे बवाल !!

है सूखे में पानी की खोज
बाढ़ में हेलीकाप्टर रोज !
हो सूखे या पाले की मार
कृषकों के संग करता भोज !
हाथ कोई अवसर ना जाए -
अंधियारे में गहे मशाल !!

अड़ जाये तो अड़ियल घोड़ा
थका नहीं जीवन भर दौड़ा !
रार वक्त से ना ठानी बस
जो मिल गया उसे ना छोड़ा !
वक्त की पहरेदारी से डरता है -
खूब जानता साल-संभाल !!

नब्ज वक्त की जान गया है
अभी-अभी संज्ञान लिया है !
आज स्वच्छता का बीड़ा ले
मन सच्चा हो मान लिया है !
चाय का ठेला या रेहड़ी हो -
हों मस्ती से मालामाल !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

51

" सूखे की अब मार पड़ी है "

साईं मंदिर भेंट चढ़ी है
भूखों की यहाँ किसे पड़ी है
गांवों से हो रहा पलायन !
शहरों में बटमार बड़ी है
तन प्यासा है मन प्यासा है -
सूखे की रफ्तार बड़ी है !!

राजकोष से फंडिंग जारी
प्यास मिटाने की तैय्यारी !
जनता-नेता धरती प्यासी
प्यास बन गई है महामारी !
संसद भी चिंता में डूबी -
न्यायालय गुहार पड़ी है !!

कृषक सभी कमजोर पड़े हैं
मजदूर आज मजबूर खड़े हैं !
रोजगार के घटते अवसर
सच मंदी के आसार बड़े हैं !
बूँद-बूँद को तरसे जीवन -
हर पनघट अब प्यास खड़ी है !!

हरियाली अभियान बने अब
बादल आसमान ठहरे तब !
बहता पानी सही दिशा दें
धरा-मनुज की प्यास बुझे तब !

सही योजना सही नियंत्रण -
आज चतुरता द्वार खड़ी है !!

मूल मन्त्र हो जीवन है जल
यहाँ दांव पर अपना है कल !
अपव्यय पानी का रुक जाए
हमको मिल पायेगा संबल !
जन-जन की भागीदारी हो -
वरन समय की मार बड़ी है !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

52
" धर्म हमारा बड़ा लचीला "

मन्त्रों में वेदों में है वो
पत्थर की मूरत में है वो !
ना मानो तो निराकार है
मानो तो घट घट में है वो !
नहीं बंदिशों में बाँधा है -
सचमुच है यह बड़ा रंगीला !!

मात-पिता हैं तीरथ जैसे
गुरुजनों की बात निराली !
दुखीजनों की पीड़ा समझी
टल जाती ग्रह दशा हमारी !

साधु-संतों ने ज्ञान दिया है -
अंतर्मन का चोगा ढीला !!

परिवर्तन स्वीकार किये हैं
धर्म ने अंगीकार किये हैं !
सामाजिक बदलाव के चलते
बदले से व्यवहार किये हैं !
कई जगह उपहास हुए हैं -
क्यों नहीं है यह हठीला !!

सच नई-नई बेला है आई
नारी जागृति की अंगड़ाई !
दर्शन की बस होड़ लगी है
पुरुष खड़े ले रहे जम्हाई !
न्यायालय भारी धर्म पर -
कैसा है यह हंसी -ठिठौला !!

सेवा में धर्म बस हम जाने
कर्मों से हम गये पहचाने !
नया -पुरातन रखा सामने
खोते जा रहे ठौर -ठिकाने !
कातर धर्म खड़ा कोने में -
बदल रहा है पल-पल चोला !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

बदली सोच नजरिया बदला
ऐसा रुख हवा का बदला !
पानी-पानी हुए जा रहे -
शिक्षा-नीति बना है मसला !
गुरुजनों के हाथ टिक गये
दिग्भ्रमित है छात्र हमारे !!

वेद नहीं अब "वाद" पढ़ रहे
कैसा हम यह देश गढ़ रहे !
विद्यार्थी गुम हुए जा रहे -
सब गुरुता का पाठ पढ़ रहे !
खुशनुमा माहौल कहाँ हैं
आग बैठी है पांव पसारे !!

नैतिकता के पाठ गुम गये
संस्कारों से विरत हम गये !
सोच पश्चिमी जोर पकड़ती-
कट्टरता में कहीं रंग गये !
देश कहीं पीछे छूटा है
सबके अपने झंडे -नारे !!

यों आँखें मींचे हम बैठे हैं
राज-नेता लगता एंठें हैं !
एक सोच हो एक नजरिया -
यही तो हम बिसुरा देते हैं !
राष्ट्रधर्म का मर्म यदि जाना
बदले-बदले होंगे नज़ारे !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "

54

" आलोक का हूँ मैं पुजारी "

मैं तो रहा गतिमान को यों देखता
उठ रहे तूफान कब मधुधार आएगी !
वे दृष्टि से ओझिल रही जो मंजिलें
बढ़ रहा पथ ठौर की कब पार आएगी !!

बीन डाले पथ के कंटक सच रहा क्यों मौन है
सपन सारे लुट गये अनुभूति बैठी मौन है !
दग्ध शोलों की तपन है महसूसी मैंने
ये सुमेरु लांघ कब शीतल बयार आएगी !!

प्रतिमा पाषाणी न समझे नमन सौ सौ बार है
जल ही अरमां की डोली भावना के द्वार है !
दीप से नाता शलभ का कर लिया स्वीकार मैंने
आलोक का हूँ मैं पुजारी न यों अंधियार भाएगी !!

झीनी सी परछाई ने भी मन लुभाया है कभी
उन्माद में बहके नहीं दर्पण सिखाता था कभी !
कैद पर्दों में है देखा अनुपम श्रृंगार मैंने
बैठ यादों के झरोखे न यों मनुहार भाएगी !!

रचियता :- भगवती प्रसाद व्यास " नीरद "